

कविताओं का बालमन पर प्रभाव

दीपमाला*

कविताएँ बहुत कम शब्दों में अपनी बात कहने का सामर्थ्य रखती हैं। उस पर भी वे कविताएँ जो पाठ्यक्रम में लगाई गई हों उनका अपना अलग ही दायित्व और कर्तव्य माना जाना चाहिए। कवि की बात जिस तरह से वह कहना चाहता है उस तरह से बच्चों के मन तक साधारण से साधारण शैली में पहुँच जानी चाहिए। यह कार्य शिक्षक का है। शिक्षक को चाहिए कि वह अपने विद्यार्थियों तक हर कविता का मर्म स्पष्ट शब्दों और आम भाषा में पहुँचा दें और लेखक का मनोरथ पूरा कर दें। प्रस्तुत लेख के माध्यम से कक्षा छठी की पाठ्यपुस्तक की तीन कविताओं— केदारनाथ अग्रवाल की ‘वह चिड़िया जो’, शमशेर बहादुर सिंह की ‘चांद से थोड़ी गप्पे’ और सुभद्रा कुमारी चौहान की ‘झाँसी की रानी’ को कक्षा में पढ़ाने के मनोवैज्ञानिक आधार और उद्देश्यों पर गंभीर चिंतन किया गया है। ये कविताएँ बालमन को शिक्षक के माध्यम से किस प्रकार प्रभावित करके उनके जीवन में नैतिक मूल्यों, प्रकृति प्रेम, सामाजिक चेतना, और राष्ट्रीय चेतना का विकास कर सकती हैं, इस ओर प्राथमिक शिक्षकों का ध्यान केंद्रित करने का प्रयत्न किया गया है। लेख का उद्देश्य बाल पाठकों में कविता के प्रति रुचि उत्पन्न कर रोचकता जागृत करना है।

बालमन कोरा कागज होता है उस पर जो बातें लिख दी जाती हैं वे अपनी अमिट छाप छोड़ देती हैं। यूँ तो कविता को भवानी प्रसाद मिश्र ने बुनी हुई रस्सी माना है। इसमें जितना भाव लिपटा हुआ है इसे कह पाना एक कठिन प्रक्रिया है, क्योंकि इसे जितना खोलते जाएँगे उतने ही इसके रेशे खुलते जाएँगे। या यूँ कहें कि उसके रेशों में वह भाव खुलने की वजह से बिखर जाएँगे। उसकी परत दर परत खोलने का काम न करके उसकी एक मूल भाव से व्याख्या करने का काम एक शिक्षक ही कर सकता है। शिक्षक ही वह सीढ़ी है जो कवि की बात उसका रहस्य या यूँ कहें कि उस कविता या गीत का मर्म समझाने का कार्य कर अपने विद्यार्थियों का नैतिक और सांस्कृतिक विकास कर उन्हें मेहनत की प्रेरणा के रास्ते से सफलता के मुकाम पर पहुँचाते हैं।

बालमन वह अवस्था कही जाती है जिसमें बालकों के मन पर समाज में घटित होने वाली या आस-पास घटित होने वाली, परिवार में घटने वाली घटनाओं का प्रभाव देखा जा सकता है। इस अवस्था को जानने के लिए बाल मनोविज्ञान एक शाखा है जो वैज्ञानिक रूप से इसका अध्ययन व विश्लेषण करती

है। इसके साथ यह स्पष्ट करती है कि बच्चों के मन पर छोटी-से-छोटी बात, छोटी-से-छोटी प्रतिक्रिया या क्रिया का प्रभाव कितना और कैसे पड़ता है। मूल रूप से यह विज्ञान बच्चों की मानसिक क्रिया का वर्णन करता है। हर शिक्षक को जो प्राथमिक शिक्षा के दायक हैं उनके लिए यह बहुत ही आवश्यक

*सहायक प्राध्यापक, श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, देव नगर, नयी दिल्ली 110 005

हो जाता है कि वह एक बार बाल मनोविज्ञान को अवश्य पढ़ लें। इसके माध्यम से वे विद्यार्थियों के कार्य व्यवहारों से उनके बारे में जानने-समझने की उचित दृष्टि रख सकते हैं। इस दृष्टि से वे बच्चों का संपूर्ण विकास करने में सहायक हो सकते हैं।

लेख में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक *वसंत* भाग 1 की तीन कविताओं के बारे में प्रकाश डाला गया है। पुस्तक की सबसे पहली कविता केदारनाथ अग्रवाल की 'वह चिड़िया जो' पढ़ने के बाद विद्यार्थियों को यह प्रतीत होता है कि इसमें एक चिड़िया के चरित्र का बखान कवि कर रहा है परंतु कवि यहाँ चिड़िया के माध्यम से खुद के व्यक्तित्व की विशेषताओं का वर्णन कर रहा है। यह वर्णन समाज को यह प्रेरणा दे रहा है कि उसे भी अपने अंदर चिड़िया जैसा चरित्र रखने की आवश्यकता है। जो अनाज से प्रेम करे और उसे भूख मिटाने के लिए जो भी अनाज मिल जाए उसे पूरी रुचि से खाकर तृप्त हो जाए। निर्जन अकेले वन में भी खुशी-खुशी कंठ खोलकर मगन होकर गाए। इसका अर्थ यह हुआ कि जीवन के अकेले पलों को या निराशा के क्षणों में भी खुश होकर जीने का प्रयत्न करता रहे। वह चिड़िया जो उफनती हुई नदी से भी अपनी प्यास बुझाने पानी ले आती है। इन पक्तियों का अर्थ है कि अपनी मंजिल को पाने के लिए लक्ष्य से कभी नहीं हटती चाहे उसका मार्ग कितना ही कठिन हो। ऐसी चिड़िया कवि खुद है। इस कविता को पढ़कर ऐसा लगता है जैसे कवि अपने बारे में बताने की चेष्टा कर रहा है। परंतु ऐसा नहीं है, यदि इसका दूसरा अर्थ निकाले तो वह यह होता है कि एक छोटी-सी चिड़िया जिस तरह

से भूख मिटाने के लिए किसी भी अन्न को ग्रहण कर लेती है। सूने और निर्जन वनों में रसीले गीत गा-गा कर उसकी निर्जनता को खत्म करती है। उफनती हुई नदी से अपनी प्यास बुझाने की सामर्थ्य रखती है, ऐसी विशेषताओं का हमारे जीवन में होना बहुत आवश्यक है। ऐसा इसलिए क्योंकि जीवन बहुत से उतार-चढ़ाव लेकर चलता है। जीवन में ऐसे बहुत से पल और क्षण आते हैं, जब हमारे पैर डगमगा जाते हैं परंतु हमें ऐसे में इस छोटे से प्राणी से शिक्षा ग्रहण कर जीवन के इन उतार-चढ़ावों को बड़ी समझदारी से जीना चाहिए। यदि कविता का यह भावार्थ शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को समझा दिया जाए तो वह अवश्य ही इससे शिक्षा ग्रहण करेंगे और जीवन में इसका प्रयोग कर साहसी प्रवृत्ति के बनेंगे। अपने शिक्षक की कही बात का विद्यार्थी के मन पर बहुत ही तीव्र गति से असर होता है और वह उसे जीवन भर याद भी रखता है।

पुस्तक की अगली कविता शमशेर बहादुर सिंह की 'चाँद से थोड़ी सी गप्पें' है। यह कविता पढ़ने के बाद यह प्रतीत होता है जैसे कवि दस-ग्यारह साल की लड़की के रूप में चाँद से बातें कर रहा है। यदि शिक्षक गहराई से समझने का प्रयत्न करें तो यह कविता चंद्रमा की सौरमंडल में पृथ्वी के चारों ओर और सूर्य के चारों ओर घूमने की स्थिति से बच्चों को अवगत कराने का एक सशक्त माध्यम हो सकती है। इसके आधार पर वर्ष और महीनों की गणनाएँ कैसे की जाती हैं, समझाने का शिक्षक प्रयत्न कर सकते हैं। इससे विद्यार्थी यह जान सकते हैं कि चाँद 30 दिन में पृथ्वी का एक चक्कर लगाता है और 30 दिनों के महीने होते हैं और 12 महीनों का एक साल। जिन्हें चंद्रमा

की वार्षिक गति के आधार पर विभाजित कर भारतीय कैलेंडर बनाया गया है। महीने के तीस दिन और तीस दिनों के पंद्रह-पंद्रह के विभाजन को समझाकर कृष्ण और शुक्ल पक्ष का ज्ञान देने के लिए यह कविता अपना महत्वपूर्ण दायित्व निभा सकती है। आज भी बच्चे को तरह-तरह के कैलेंडरों का ज्ञान नहीं होता। प्रतिपदा, चतुर्थी, एकादशी आदि क्या हैं? इनका चाँद के बढ़ने-घटने से क्या संबंध है? अमावस्या, पूर्णिमा क्या है? इनका भारतीय संस्कृति में क्या महत्व है? यह समझाया जा सकता है। साथ ही यह कविता प्राकृतिक सौंदर्य का भी अनुपम उदाहरण देती है 'चाँद ने आकाश रूपी तारों से जड़ा वस्त्र पहना हुआ है और सिर्फ अपना मुँह खोला हुआ है— गोरा गोल मटोल'। इस कल्पना को शिक्षक चित्रों के माध्यम से और तर्कों के माध्यम से प्रस्तुत कर प्रकृति के प्रति विद्यार्थियों के मन में प्रेम उत्पन्न कर सकता है। कविता से एक और प्रसंग लिया जा सकता है जिसमें उसके घटने और बढ़ने की प्रक्रिया को समझाने में शिक्षक सफल हो सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि एक कविता को पढ़ाने का एक ही तरीका न अपनाकर उसकी विभिन्न रूपों को अपनाया जा सकता है और उसके माध्यम से बच्चों के ज्ञान और नैतिक मूल्यों में वृद्धि की जा सकती है।

पुस्तक की अगली कविता 'झाँसी की रानी' सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखी गई एक प्रसिद्ध कविता है। जिसे आज भी बच्चों के मुख से या बड़ों के मुख से सुना जा सकता है। ऐसी कुछ कविताएँ जो बचपन में हमने भी पढ़ीं और आज तक हमारे मानस स्थल पर अंकित हैं। 'बुंदेले हरबोलो के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।'

जैसी कुछ पंक्तियाँ मुँह जबानी हमें आज भी याद हैं। उसके पीछे हमारे शिक्षकों द्वारा उसका वर्णन और उसके मूल अर्थ का समझाना हो सकता है, जिसकी वजह से वह हमें आज तक याद रह गई हैं और कभी नहीं भूलती। इस कविता को यदि साधारण तौर पर देखें तो यह इतिहास में वर्णित झाँसी की रानी की कहानी कहती है। यह कविता अंग्रेजों से रानी की लड़ाई से विद्यार्थियों को अवगत कराती है। यदि लेखिका के मंतव्य से इसे समझा जाए तो यह कह सकते हैं कि यह राष्ट्रप्रेम की अद्भुत मिसाल पेश करती है। कविता के माध्यम से लेखिका अपने देश पर मर मिटने वाली रानी लक्ष्मीबाई की कथा कहती है। यदि देखा जाए तो शिक्षक इस कविता को पढ़ाते हुए बच्चों को विशेषकर बालिकाओं को रानी लक्ष्मीबाई की तरह दृढ़ संकल्प, साहसी, धैर्यवान, वीर, चरित्रवान होने का मर्म समझा सकते हैं। कविता के जहाँ एक पहलू के माध्यम से झाँसी की रानी की कहानी कही जा सकती है तो वही अंग्रेजों के अधीन हमारे भारत देश की दशा और उस समय के राजाओं की दशा का इतिहास भी बताया जा सकता है। विद्यार्थियों को समझाया जा सकता है कि पराधीनता की दशा किस तरह से हमारे देश पर हावी रही और हम सब किस तरह से एक ऐसे रक्तिम इतिहास से गुजरे हैं जो कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। देश की उस समय की अवस्था उन्हें समझाना आवश्यक हो जाता है। विद्यार्थी इसके माध्यम से एक तरफ अपने देश के राजाओं और रानियों का गौरवशाली इतिहास और उनका महत्व तो समझ पाते ही हैं साथ ही अपने देश की संस्कृति, सभ्यता और वीरता को भी जान पाने में सक्षम होते हैं। यह कविता अंग्रेजों की कूटनीतियों का भी वर्णन करती है। जिसे शिक्षक अपनी भाषा में

विद्यार्थियों को समझाकर उनका ज्ञानवर्धन कर सकते हैं। देश की आजादी की लड़ाई में एक राज्य झाँसी की आजादी के लिए किस तरह से रानी ने लड़ाई लड़ी, यह बात अपने शिक्षक से समझकर विद्यार्थी देश की आजादी के लिए लड़ने वाले अन्य क्रांतिकारियों और नेताओं से भी परिचित हो पाते हैं। उनमें देश के प्रति राष्ट्रीयता का भाव जागृत किया जा सकता है। कविता जहाँ रानी की कहानी कहती है वहीं यह कविता देश प्रेम पर मर मिटने वाली एक महान नायिका के रूप में लक्ष्मीबाई को चित्रित करती है जो स्त्री सशक्तिकरण का एक अद्भुत रूप है। जिसे बालिकाएँ अपने जीवन में अपनाकर अपने नैतिक मूल्यों के प्रति सजग हो सकती हैं। भारतीय सभ्यता और संस्कृति को समझकर विद्यार्थी, निडर होकर जीवन जीने का प्रयत्न कर सकते हैं। रानी के चरित्र की सारी विशेषताओं का वर्णन कर एक शिक्षक बालिकाओं को उनसे प्रेरणा लेकर जीवन में साहसी वीर और निडर होने का आदर्श रख सकता है। “जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी, यह तेरा बलिदान स्वतंत्रता अविनाशी, होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी, हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी” पंक्तियों के माध्यम से शिक्षक स्वतंत्रता की अलख जगाने वाली रानी लक्ष्मीबाई के माध्यम से समझा सकते हैं कि चाहे वह झाँसी को बचा नहीं पाई पर उन्होंने जीते जी उसे अंग्रेजों के हाथों में नहीं जाने दिया। यह भाव कि अंजाम क्या होगा? रानी पहले ही सोच लेती तो शायद वह अंग्रेजों से लड़ती ही नहीं, पर वह अंजाम सोचे बिना लड़ी। इस ऐतिहासिक घटना ने क्रांति की जो मशाल जलाई चाहे उसको इतिहास में उस तरह से वर्णित नहीं भी किया गया हो तब भी भारतवासी रानी लक्ष्मीबाई के इस बलिदान को कभी

नहीं भूल सकते। भारतीयों को रानी के इस बलिदान का आभारी रहना ही होगा, क्योंकि रानी की चेतना ने ही भारत के महान क्रांतिकारियों को जन्म दिया है। हमारा देश ऐसे लोगों के बलिदानों से ही आजाद हो पाया है।

निष्कर्ष

शिक्षक चाहे तो कविता को सिर्फ ऊपरी तौर पर समझाकर अपना पाठ्यक्रम पूरा कर सकता है। यदि वह शिक्षा को विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करने वाला मानता हो तो वह अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझकर कविता के हर मर्म को पाठक तक पहुँचाने का प्रयत्न कर सकता है। उसे करना भी चाहिए, क्योंकि जो बात बच्चों के मन पर एक शिक्षक अंकित कर सकता है वह समाज का कोई और व्यक्ति उसके माता-पिता भी नहीं कर सकते। लेख का संपूर्ण उद्देश्य कविता के विभिन्न अर्थों को रोचक तथ्यों की सहायता से शिक्षकों द्वारा कैसे अभिव्यक्त किया जाना चाहिए इस पर ध्यान केंद्रित करना है। यदि शिक्षक ‘वह चिड़िया जो’ कविता को एक आम व्यक्ति की जिजीविषा से जोड़कर, ‘चाँद से थोड़ी गप्पे’ कविता को प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ हिंदू कैलेंडर की गणना और सौरमंडल की रोचक वैज्ञानिक जानकारी से जोड़ते हुए विद्यार्थियों का ध्यान केंद्रित कर पाने में सफल हो जाए, साथ ही ‘झाँसी की रानी’ कविता के माध्यम से रानी लक्ष्मीबाई के जीवन की मार्मिक कथा बताते हुए स्वतंत्रता पूर्व भारत का संक्षिप्त इतिहास बताते हुए स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए जान न्यूछावर करने वाले महान क्रांतिकारियों की कथा भी जोड़ दें तो वह बच्चों के बालमन पर देशभक्ति का महत्व अंकित कर सकता है। अतः इसके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि हम सभी शिक्षक जो

भी पढ़ा रहे हों उसे स्वयं कम-से-कम चार-से-पाँच बार अवश्य पढ़ें। विषय को तत्कालीन परिस्थितियों से जोड़ते हुए आधुनिक युग में उसका मर्म समझने के बाद अलग-अलग तरह से उसे कक्षा में समझाने का

प्रयत्न करें। जिससे हम शिक्षकों की नैतिक जिम्मेदारी तो संपूर्ण होगी ही हमारे द्वारा एक नवीन युवा पीढ़ी के निर्माण का लक्ष्य भी पूर्ण हो पाएगा। लेखक का भी सही मायने में कविता रचना का मनोरथ सफल हो पाएगा।

संदर्भ

यादव, उषा. नवंबर 2009. *वैश्वीकरण और हिंदी बाल कविता*. योगेंद्र दत्त (संपादक). आजकल, दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *वसंत भाग 1*. वह चिड़िया जो (कविता). केदारनाथ अग्रवाल (लेखक), रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

———. 2006. *वसंत भाग 1*. चांद से गप्पे (कविता). शमशेर बहादुर सिंह (लेखक). रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

———. 2006. *वसंत भाग 1*. झाँसी की रानी (कविता). सुभद्रा कुमारी चौहान (लेखिका). रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.